

- P. 38. On पादः, l. 3.] Also पादः.
On रवः.] Likewise रावः.
On शिञ्जितः, l. 8.] Also शिञ्जा.
- P. 39. On प्रतिधानः, l. 2.] Likewise प्रतिखनः.
On निघादः, l. 4.] Also निघदः.
On मद्रः, l. 9.] Likewise मद्रः.
- P. 40. On एकतालः, l. 1.] Also एकतानः.
On आनङ्गः, l. 6.] Likewise अवनङ्गः.
On सुधिरः, l. 7.] Also सुधिरः.
On अङ्कः, आलिंग्यः, and ऊर्द्धकः, l. 11.] Likewise अङ्की, आलिंगः, and ऊर्द्धकः.
- P. 41. On प्रसेवकः, l. 4.] Also प्रसेवः.
On डमरुः, l. 7.] Likewise नुतः डमरुकं.
Over तत्त्वं, l. 10.] read n. Over ओधः, read m. † Over धनं, read n.
A note on तत्त्वं.] Also तत्त्वं, and तत्त्वं.
- P. 42. Add to note 3] भक्तुः.
A note on भर्त्तृदारिका, l. 11.] Some add भर्त्तृदारिका.
On भट्टिनी, l. 13.] One Commentary reads भेगिनी.
On अब्रह्मण्यं, l. 16.] Likewise अब्राह्मण्यं.
- P. 43. On मारिषः, l. 4.] Also मार्यः and मार्यकः.
On निर्वहणं, l. 6.] Some add निवर्हणं.
A note on l. 11.] In dramatick poetry the *tastes*, or sentiments, in which the audience sympathizes, are reckoned eight: as here enumerated. To which some add श्रान्तः, devotion and resignation. Others, वात्सल्यं, parental affection.